फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

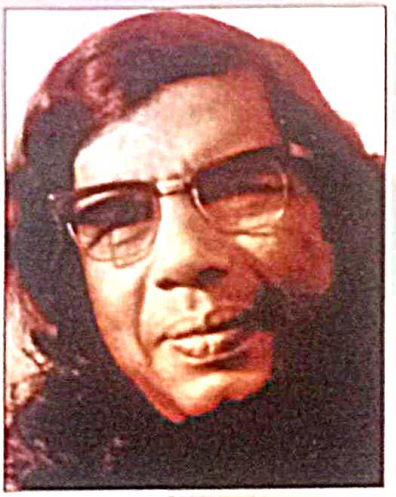

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

73. फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में नारी के विविध रूप 418
डॉ. अशोक अंधारे

74. फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य की भाषा शैली 422
डॉ. गंगाधर वानोडे

75. रेणु और नागार्जुन : अंतःसंबंध 429
डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे

76. आँचलिक उपन्यासकार रेणु और नागार्जुन : अंतःसंबंध 435
डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे

77. फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में ग्रामीण एवं सामाजिक चेतना 443
प्रा. डॉ. वडचकर एस.ए.

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में ग्रामीण एवं सामाजिक चेतना

प्रा. डॉ. वडचकर एस.ए.

फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्धि ग्रामकथा-लेखन और यर्थाथवाद से है। फणीश्वरनाथ रेणु को विशेषतः "मैला आँचल और 'परती परिकथा' के रुप में देखा जाता है। रेणुजी ने लगभग 60 से अधिक कहानियों की रचना की है। रेणु की पहली औपन्यासिक कृति 'मैला आँचल' का प्रकाशन हुआ तब उसे गोदान के बाद महाकाव्यात्मक उपन्यास माना गया। रेणु का मनिषी अंतकरण शैक्षणिक प्रगति से गाँव की सामुहिक प्रगति का सपना देखता है। जातीयता का टूटन चाहत बहुत कुछ बदलाव आता भी है। गाँव केनवयुवक और स्त्रियाँ जितेंन्द्र की हवेली में आने लगती है। नवयुवक सुवंश-मलारी के प्रेम संबंधां कोलेकर उठे वितंडतावाद में उसका साथ देते है। शिक्षा औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण गाँव कौन सी मानसिकता प्रदान करते हैं। अंधविश्वासों से संस्कार अब हिलने लगे है। 'रेणु' को ग्राम जीवन का समग्र बोध है। उन्हें उनके यथार्थ की गहरी परख और पहचान है जिससे वे लोक तत्वों की समाहिति से और भीगहरा चिीति करते है। आँचलिक उपन्यासकार रेणुजीने गॉवों की मिट्टीसे जोडने का प्रामाणिक प्रयास किया है।

वर्तमान परिवेश में अँचलों में अनेक परिवर्तन होने के बावजूद भारतीय संस्कृति की सच्ची तस्वीर छुपी हुई है। इनके उपन्यासो में प्राकृतिक परिवेश एवं संस्कृति को अधिक महत्व दिया है। रेणु के उपन्यास काप्राणतत्व लोकसंस्कृति है। इन्होने आँखो-देखी प्रामाणिकता से स्पष्ट की है। आँचलिक उपन्यास में जिनविषयों को वर्णित किया जाता है वे सभी रेणु के उपन्यासें में चित्रित हुआ

College, Sonpeth Late Ramesh ... (ACS) Dist. Parbhani

है। रेणु ने उसक्षेत्र में प्रचलितरस्म-रिवाज, आचार-विचार, रहन-सहन, त्यौहार, विवाह, खान-पान, भाषा शैली, परंपरा, गरीबी, सांस्कृतिक छटा लोक संस्कृति का चित्रण अपने साहित्य में किया है। जिससे पाठक वर्ग उस आँचल की सांस्कृतिक परिदृश्य से परिचित हो जाते।

आज 'कम्प्यूटर' के युग में लोकजीवन पर धर्म की पकड मजवुत है। धर्म की यह पकडदो रुपों में दृष्टव्य है। एक ओर बाहयाचार और पाखंड आदि से धर्म का स्वरुप है, जो मुख्यतः अभिजात वर्गऔर बुर्जुआ वर्ग की तथाकथित संस्कृति का अंग है तो दूसरी ओर धर्म का वह स्वरुप है, जो जन-साधारण के 'अन्युदय' और 'निःश्रेयस' में अपनी भूमिका निभाता रहा है। 'मैला आँचल' में मठ और उससे संबंध अनैतिकता का वर्णन विस्तार से हुआ है और यह सादृश्य है। रेणु यहाँ पर दिखाना चाहते हैकि सदाचार, ईश्वरोपासना और परोपकार आदि के केंद्र माने जाने वाले गाव का वास्तविक रुप क्या है? नए महंत दवाराराम पियारी को सार्वजनिक रुप में रखैल के रुप में मान्यता देना पतन की चरम सीमा है। भारतीय संस्कृति में एक ओर विचार मुद्रा, सहिष्णुता और सदभाव को महत्व दिया जाता है तो दूसरी ओर 'कटटरता' या 'घृणा' को अस्वीकार किया जाता है। प्रेमचन्द की परम्परा को आगे वढाने का श्रेय उपन्यास और कहानियों में रेणुजी को है। रेणु अंचल विशेष की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विशेपताओं को अदभुत भाषा कौशल्य के साथ उजागर करते है। अनेके चरिीं की छटा भी निराली है। रेणु की कहानियों में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, वह जहॉ कहीं आँचलिक है वहाँ अदभुत अपूर्व हो गयी है।

रेणु की पहली औपन्यासिक कृति 'मैला आँचल' का प्रकाशन अगस्त 1954, में हुआ उनकी रचनाओं में मानवीय आस्था, राजनीतिक विश्वास की पहचान भी हमें मिलती है। स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय ग्राम निवासी नगरों मे आने वाली जागरुकता एवं परिवर्तनशीलता सेसर्वथा अपरिचित रहते थे और इस कारण अधिकांश सुविधाओं से भी वंचित रहते थे। देश स्वाधीन होने के पश्चात स्वभावतः ग्रामों की समस्याओं की ओर भी नेताओ का ध्यान गया और उनके सर्वागीन विकास पर वलदिया गया। इन नेताओं ने स्वतंत्रता के लिए होने वाले संघर्ष के समय देश के ग्रामाँचलों मे जागृति-संदेश देते समय उसकी समस्याओं के विविध पक्षों का अध्ययन किया था आजादी के बाद ग्रामाँचलों को अपने उपन्यासों का विपय बनाया और मात्र अपने दो उपन्यासें द्वारा ग्राम-जीवन की सम्पूर्ण कथा को हमारे सामने रख दिया। वे मैथिलीशरण गुप्त की तरह केवल

ग्रामजीवन की सुषमा पर मुग्ध नहीं होते बल्कि उससे कहीं आगे बढ़कर वहाँ की तड़पती अनेकानेक समस्याओं से घिरी जिन्दगी और दो जुन रोटी की चिन्ता को भी उजागर करते है। धार्मिक आस्था लोक संस्कृति का मूलाधार है। जिसका ग्रामीण सामाजिक जीवन परगहरा प्रभाव दिखाई देता है। ग्रामीण जीवन का कोई भी अंग धार्मिकता से अछुता नही है। उनका परिवारिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन उनकी धार्मिक आस्था से परिचालित होता है। सांस्कृतिक पर्व में अनेक सांस्कृतिक प्रथाए प्रचलित है। उनमें मेलों-त्यौहारों को मनाने की प्रथा सबसे प्रमुख दिखाई देती है। लोक कथाओं में लोक मानस में ही जीवित, ग्रामीण जीवन में प्रचलित लोक कथाओं का हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में विस्तार के साथ वर्णन दुआ है। रेणु प्रेमचंद के बाद ग्रामीण जीवन के सबसे प्रमुख कथा का रहे। इनकी प्रमुखता का सबडे बडा यह कारण है। की इन्होंने ग्रामीण जीवन को अपने कथाओं का आधार बनाया है। इनके कथाओं के पात्र निम्नवर्गीय हरिजन, किसान, लोहार, चर्मकार आदि रहे हैं। इन्होंने पात्रों की जीवन-कथा की रचना की है। रेणुने सताये हुए शोषित पात्रों की सांस्कृतिक संपन्नता, मन की कोमलता और रागात्मकता तथा कलाकारोचित प्रतिभा का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। रेणु और प्रेमचंद दोनों में पात्रों को लेकर साम्य है। 'साधारण' मनुष्य का पूरा चित्र अनकी कहानियों में देखने मिलता है। रेणु जनता की समस्याओं के प्रति ध्यान नही ऐसे बात नहीं। वे कहते है– "मैंने जमीन, भूमिहीनों और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को लेकर बाते कीं। जातिवाद, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार की पनयती हुई बेल की और मात्र इशारा नहीं किया था, इसे समूल नष्ट करने की आवश्यकता पर भी बल दिया था''।

परती परिकथा में रेणु ग्रामजीवन में गहरे पैठे है, तथा उनकी प्रीति धरती के प्रति औरप्रगाढ हुई है। ग्रामीण - जीवन की छोटी-बडी सच्चाईयाँ धरती की छूअन से बनी प्रतीत होती है। 'रेणु' ने गाँव को बडी निकटता से देखा ही नही, भोगा भी है। अतः स्वतंत्र्योत्तर ग्राम-जीवन आर्थिक विपन्नताएँ रोजी - रोटी के अनुतरित प्रश्न सरकारी तथ्य की स्वार्थी, मनोवृत्ति टूटते-बनते नये नाते रिश्तों की दुनिया, छटपटाते मूल्य-बोध का गहरा अहसास इस धरती की कृति से होता है। 'परती परिकथा' के केन्द्र में परानपुर गाँव है। प्रारम्भ का चित्र है "बहुत उन्नत गाँव है परानपुर सात-आठ हजार की आबादी है। प्रत्येक राजनीतिक पार्टी की शाखा है यहाँ। धार्मिक संस्थाओं के कई धुरन्धर धर्म/वजी इस गाँव में विराजते हैं। पंडित नेहरु तीन वार पदार्पण कर चुके है इस गाँव में। लाहौर

Late Ramesh ... College, Sonpeth, Dist. Parbhani

Late Ramesh ... (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

कांग्रेस के बाद पहली बार, दूसरी बार 1936 में चुनाव के दौरे पर और पिछले साल कौसी प्रोजेक्ट देखने आए थे तब। "परानपुर गाँव की सबसे बडी समस्या भूमि की समस्या है। यह उपन्यास धुल-धुसरित वीरान धरती पर अधिकार के विभिन्न दावों-उपदावों की कथा है, परानपुर के नव-निर्माण की कथा है। भूमि सम्बधी उन सरकारी सुधारों की, जिन्होंनेअपने प्रभावों की परिणति से गाँव को विभिन्न इकाइयों में बाँटकर रखा है। जमींदार और किसान ही एकधरती पर परस्पर विभिन्न दावेदार नही, एक परिवार के ही विभिन्न दावेदार है।

उपन्यास में राजनीति के नाम पर भुदानियों की असफलता का भी थोडा चित्रण है जो भूदानियों की स्वार्थ नितियों को स्पष्ट करता है। भूदान करने में भी किसानों का निजी स्वार्थ कांग्रेसी तथा समाजवादी नेताओं को प्रसन्न करने का है। क्योंकि सर्वे के समय अनुचित रुप से दूसरों की भुमिपर दावा करअधिकार करने में वे सफल हो सके। भाई-भाई तक एक दूसरे का भाग हडपने के फेर में है गुरुध्वज 'झा' नेवकील बनकर इसका खूब लाभ उठाया। लुत्तों ने भी भुदानी कार्यकर्ताओं के लिए तीन सौ एकड भूमि का दानपत्र बटोरा, परंतु इसमें अपना कमीशन न मिलने पर जनता को कार्यकर्ताओं के खिलाफ संगठित करने में सफलता प्राप्त की। स्वतंत्त्रापूर्व का ग्रामीण समाज अंग्रेजों के आगमन पूर्व की सामन्तवादी व्यवस्था और उनकेआगमन के साथ आई पूँजीवादी व्यवस्था को दो पाटों के बीच पिसता रहा। पहली संस्कृति के रुप में अवशिष्ट थी और दूसरी सभ्यता बनकर आई तथा इसके आगमन के साथ ही ग्राम जीवन की व्यवस्थित शाखा विश्रृंखलित हो गई। 1920 में जब गांधीजी का नारा गाँव-गाँव में धुम रहा था, तब कांग्रेसकर्मी नयी जागृति के अग्रदूत बन गये थे। समाज सुधार को लेकर और ग्राम सुधार को लेकर चर्चाए होने लगी थी।

नयी साम्यवादी और समाजवादी की हवा चलने लगी थी। परन्तु अपनी पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं में जकडे गाँव पिछडे ही रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में सामाजिक रीतियों, अभिवृतियों व मूल्यों में विशमढंग से परिवर्तन हुए जबकि सामाजिक जीवन का हर पक्ष इस संक्रमण में फसा हुआ था। स्वतंत्रता पूर्व भारतीय आशावादी था। आजाद भारत की सुखद कल्पना से समस्त जनता को एक सूत्र में बांध रखा था। भारतीय जनता ने बहुत अधिक उम्मीदे बना रखी थी, किन्तु आजादी के पश्चात वह साकार होते नही दिखाई दिये। रेणु के साहित्य पर राजनीति की हावी नही है, तो भी उनका समाजवादी चिंतन छिपा नही। स्वयंसमाजवादी होते हुए भी उन्होंने 'मैला आँचल' के

बावनदास कांग्रेसी एवं 'आत्मसाक्षी' कहानी के साम्यवादीगनसत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। "समाजवाद के बिना स्वतंत्रता असार्थक है यह वे मानते थे। इसी कारण मेरीगंज के स्वराज्योत्सव में औराही हिंगना का एक समाजवादी कार्यकर्ता नारा भी लगाता है। कि यह आजादी झुठी है"।

रेणु की दृष्टि में मेरीगंज गाँव की बीमार सामाजिक स्थिति के दो कारण है - बेकारी और गरीबी। जिनके कारण सम्पूर्ण गाँव विभिन्न जड़ताओं और अभावों का भयानक शिकार है। अन्न-वस्त्र जैसी मौलिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती है। वर्ग-वैशम्य अपने उग्ररुप में विद्यमान है। मुटठी भर अन्न ओर तन की लाज मात्र ढकने के लिए वस्त्र जुटा सकने में असमर्थ व्यक्ति तिल-तिल भर रहे है। जमींदार खटमलों की तरह सर्वहारा वर्ग को चुसते है। जड़ता ऐसी कि विवश और छटपटाती जिन्दगी जीकर भी वे उफ तक नहीं करते। डॉक्टर प्रशान्त हतप्रभ है कि किस कठोर नियंता ने इन हजारों क्षुधितों को अनुशासित कर रखा है। कफ से जिनके दोनों फेफड़े जकड़े हुए है और जिन्हे ओढ़ने को वस्त्र नहीं और सोने के लिए चटाई तक उपलब्ध नही हैं। मेरीगंज में सामाजिक स्थिति में असमानता के तत्व उभरते हुए दिखाई पडते हैं। गाँव में बारहों वर्णो के लोग हैं। यहाँ एक भी मुसलमान नहीं है।

देश-विभाजन के समय लोग सोचते है "बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाकिस्तान लेकर ही छोड़ता। "छोटे मोटे धंदे करने वाले मुसलमान बीच-बीच में मेरीगंज आते रहते। आजादी प्राप्ति के समय हिन्दू मुस्लिम दंगों के समय ऐसे ही एक गरीब मुसलमान जुमराती से सुमिरनदास ने पांच रुपये छीन लिए। बालदेव हिंदू और मुसलमान के साम्प्रदायिक दंगो से अवश्य विचलित थे। उसे लगता है कि अंधेरा हो गया। एक दम सब पगला गये। उसे कीर्तन की पंक्तियाँ याद हो जाती है।

"अरे चमके मन्दिरवा में चाँद
मसजिदवा में बंसी बाजे"

इसी प्रकार जीवन के विभिन्न आयामों को 'मैला आँचल' स्पष्ट करता है। तो परती-परिकथा की कथा का आधार भी परानपुर गाँव, जो प्रतीक बनकर आया है। यह काल्पनिक सम्भावना पर आधारित है। स्वतंत्रता के पश्चात के संक्रमण कालीन भारतीयों का प्रतिनिधित्व करता है।

C. College, Sonpeth • Late Ramesh Warpudkar • Dist. Parbhani

संदर्भ

1. भारत यायावार - रेणु रचनावली
2. मैला आँचल - फणीश्वर नाथ रेणु
3. भारत यायावार - रेणु रचनावली
4. हिन्दी उपन्यास - लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
5. मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु
6. परती-परिकथा - फणीश्वरनाथ रेणु
7. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास - डॉ. कांति वर्मा
8. जुलूस- रेणु
9. हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण - श्री महेन्द्र चतुर्वेदी

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

डॉ. सतीश यादव

जन्म 9 अक्टूबर 1973। एम.ए. हिंदी पीएच.डी., 1995 से शिवाजी महाविद्यालय, रेनापुर जि. लातूर (महाराष्ट्र) में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत। सन् 2022 तक 18 पुस्तकें प्रकाशित। आलोचना तथा संपादन लेखन का प्रमुख कार्यक्षेत्र। हिंदी और मराठी की पत्र-पत्रिकाओं में लेखन।

पुस्तकें (हिंदी) : हिंदी के कालजयी उपन्यास, आधुनिक विमर्श: विविध आयाम, आलोचना का स्वराज, अज्ञेय और मर्ढेकर का रचना कर्म तथा आलोचना का आलोक।

पुस्तकें (हिंदी संपादन) : 'पथिक' कविवर हरिवंशराय बच्चन, निबंध सौरभ, साहित्य भारती, अर्वाचीन हिंदी काव्य, गद्यकार अज्ञेय तथा उनकी रचना धर्मिता (खंड 2), कवियों के कवि अज्ञेय (खंड 1), गजानन माधव मुक्तिबोध: सृजन और संदर्भ, हाशिए का समाज और हिंदी-मराठी साहित्य, लोकधर्मी लोकचिंतक : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, फणीश्वरनाथ रेणु : संदर्भ और प्रकृति, गीत गाएँ विज्ञान के, खोज एहसासों की (अनुवाद संपादन)।

संपादन (मराठी) : समीक्षेचा अनुबंध

प्रकाशनाधीन : 'अंतरीचा डोह' (मराठी वैचारिक लेख संग्रह)

पुरस्कार : 'गुरु गौरव पुरस्कार', 'राष्ट्रभक्त स्वामी विवेकानंद पुरस्कार', स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड का 'उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार', महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादेमी, मुंबई का 'आलोचना का स्वराज' ग्रंथ हेतु 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी समीक्षा पुरस्कार', स्मृतिशेष एड. देविदासराव जमदाडे प्रबोधन विचारमंच, लातूर का राज्य-स्तरीय 'कार्यनिष्ठ शिक्षक पुरस्कार', डॉ. देवीसिंह चौहान साहित्यिक पुरस्कार (जि.प., लातूर)।

संपर्क : मुक्तिपर्व, शारदा नगर, अंबाजोगाई रोड, लातूर (महाराष्ट्र) 413 531, 94032 49804

यश

यश पब्लिकेशंन्स, दिल्ली
1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा दिल्ली-32

ISBN 978-93-85647-03-1

www.yashpublications.co.in